

Padma Shri



SRIVIDYA BABA BALIA

Srividya Baba Balia is the founder of both Sishu Ananta Ashram and Ananta Balia Trust, Arilo, Tirtol, District Jagatsinghpur, Odisha which is a socio-spiritual organization established since last 50 years. He is working as the Chairperson of both the organizations. The Ananta Balia Trust is mainly working under his holy guidance for so many philanthropic works in the State as well as in the Country.

2. Born on 8th April, 1954, Srividya Balia completed his High School and at the age of 17, he left his home and family and became a great saint who through the marvels of his spiritual power, divinity, abstract devotion, universal love, sympathy and compassion has conquered the heart of thousands not only in the State of Odisha but also in the remote corners of the Country.

3. Srividya Balia's organization rendering social services for the last 50 years in the field of social reforms viz. women empowerment through spreading awareness in society about the superstitious against women for example witch-crafts, widowhood etc., participatory democracy, environment protection and blood donation. He is a staunch nationalist and reformist known for promoting value-based family life. He has established a Sanskrit School & College in 1983 and providing free education to approximately 5000 poor students till date of all castes.

4. Srividya Balia has been awarded as Prakruti Bandhu in 1993 and Prakruti Mitra in 2017 by Government of Odisha. Besides, he is the recipient of numerous award honour like Parthana Samman in 2015; Sishu Ananta Samman for the social work in 2003; Sanskruti Sarathi award for the cultural aspect in 2007; Sanskruta Rakshak award for his cultural aspect in 2007; Kaling Pratiba Ratna award for social service in 2013; Dharma Chakra Samman for communal harmony in 2014; Jagatsinghpur Gourav Samman for social service in 2005; Santha Pradipa award for social service in 2016; Odia Loka Katha Samman for his great contribution to Odia literature in 2012; Yasobanta Pratiba Samman for upliftment of Odian literature in 2009; Gandhi Gourav Samman for his social service in 2019 and Vishwa Premi Samman for his dedicated cultural work etc.

पद्म श्री



श्रीमद बाबा बलिआ

श्रीमद बाबा बलिआ अरिलो, तिरतोल, जिला जगतसिंहपुर, ओडिशा स्थित शिशु अनंत आश्रम और अनंत बलिआ न्यास के संस्थापक हैं, जो पिछले 50 वर्षों से स्थापित एक सामाजिक-आध्यात्मिक संगठन हैं। वह इन दोनों संगठनों के अध्यक्ष के रूप में काम कर रहे हैं। उनका न्यास मुख्यतः उनके पावन सानिध्य में राज्य के साथ-साथ देशभर में परोपकारिक कार्यों में लगे हुए हैं।

- दिनांक 08 अप्रैल, 1954 को जन्मे, श्रीमद बलिआ ने अपना हाईस्कूल पूरा किया और 17 वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर व परिवार त्याग दिया और एक महान संत बनें, जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक शक्ति, आलौकिकता, असीम भक्ति, शाश्वत प्रेम, सहानुभूति और अनुकंपा के जरिए न केवल ओडिशा राज्य में बल्कि देश के दूरस्थ क्षेत्रों में भी हजारों लोगों के हृदयों को जीता।
- श्रीमद बलिआ का संगठन पिछले 50 वर्षों से समाज सुधार के क्षेत्र में काम कर रहा है तथा महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में महिलाओं के विरुद्ध अंधविश्वासों जैसे अभिचार, विधवापन आदि के बारे में समाज में जागरूकता उत्पन्न कर समाज सेवा कर रहे हैं। यह संगठन सहभागी लोकतंत्र, पर्यावरण संरक्षण और रक्तदान के माध्यम से भी समाज सेवा का कार्य कर रहा है। वह एक घोर राष्ट्रवादी हैं और पारिवारिक जीवन पर आधारित मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए एक सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने वर्ष 1983 में एक संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की और उन्होंने आज की तिथि तक सभी जातियों के लगभग 5000 गरीब विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की है।
- श्रीमद बलिआ को ओडिशा सरकार द्वारा वर्ष 1993 को प्रकृति बंधु और वर्ष 2017 में प्रकृति मित्र के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उनको विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जैसे वर्ष 2015 में परथना सम्मान; वर्ष 2003 में सामाजिक कार्यों के लिए शिशु अनंत सम्मान; वर्ष 2007 में सांस्कृतिक क्षेत्र में उनके कार्यों के लिए संस्कृति सारथी सम्मान; वर्ष 2013 में समाज सेवा के लिए कलिंग प्रतिभा रत्न सम्मान; वर्ष 2014 में साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए धर्मचक्र सम्मान; वर्ष 2005 में समाज सेवा के लिए जगतसिंहपुर गौरव सम्मान; वर्ष 2016 में समाज सेवा के लिए संत प्रदीप सम्मान; वर्ष 2012 में उड़िया साहित्य के क्षेत्र में उनके महान योगदान के लिए ओडिशा लोक कथा सम्मान; वर्ष 2009 में उड़िया साहित्य के उत्थान के लिए यशोवंत प्रतिभा सम्मान; वर्ष 2019 में उनके समाज सेवा के कार्यों के लिए गांधी गौरव सम्मान और उनके समर्पित सांस्कृतिक कार्यों के लिए विश्व प्रेमी सम्मान आदि।